ISSN : 2581-8848

विशेषांक भाग - I

जनवरी, 2026

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. दीपक तुपे

डॉ. प्रदीप पाटील

संपादकीय

गीत और ग़ज़ल सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं है। वास्तविक रूप में हिंदी साहित्य के व्यापक परिदृश्य में गीत और ग़ज़ल दो ऐसे प्रमुख विधाएँ हैं जिनके माध्यम से मानव जीवन की संवेदनाएँ, विचार, अनुभूतियाँ और सामाजिक यथार्थ अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त हुए हैं। साहित्य के शुरुआती दौर से ही गीतों की भूमिका अहम रही है। लिखित साहित्य से पहले मौखिक रूप में गीत मानवीय संवेदना को चित्रित करने का काम करते रहे हैं। साथ ही अपनी परंपराओं की मुखरवानी गीत ही रहे हैं। गीत भावनात्मक सौंदर्य, प्रेम, करुणा और प्रकृति के सौंदर्यबोध का प्रतिनिधित्व करते हैं। ग़ज़ल की शुरुआत भले ही हाला और सुंदरी से शुरू हुई लेकिन कालांतर में ग़ज़ल ने जीवन की गूढ़ सच्चाइयों, विडंबनाओं और सामाजिक विषमताओं को लयात्मक रूप में प्रस्तुत किया। बदलते समय, समाज और राजनीति के साथ इन विधाओं का रूप, विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति निरंतर परिवर्तित होती रही है। इसी परिवर्तनशीलता के अध्ययन से इनकी विविधता और गहराई का बोध होता है। इस विशेषांक के अंतर्गत "हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य" इस विषय पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया है।

हिंदी गीत और ग़ज़ल समाज के दर्पण हैं, जो समय-समय पर बदलते सामाजिक परिवेश, मानवीय संबंधों और मूल्यबोध को प्रतिबिंबित करते रहे हैं। इन विधाओं ने लोकमानस की भावनाओं, संघर्षों, आकांक्षाओं और विसंगतियों को बड़ी संवेदनशीलता से अभिव्यक्त किया है। साथ ही गीत और ग़ज़ल के अंतर्गत स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। स्त्री की अस्मिता की बात करते हुए उनकी समस्याओं पर बेबाकी से बात की गई है और की जा रही है। साथ ही गीत और ग़ज़ल के माध्यम से राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विषयों पर गीतकार एवं और ग़ज़लकारों ने लेखनी चलाई है। जिसका विस्तार से विवेचन इस विशेषांक के कई लेखों में देखने मिलेगा। इस विशेषांक के माध्यम से इस बात की ओर भी ध्यान दिया गया है कि गीत और ग़ज़ल सिर्फ मनोरंजन के साधन न होते हुए यह समाज को आईना दिखाने का काम बहुत ही कर रहे हैं और यह हमारे मानवी संवेदनाओं से गहराई से जुड़े हुए हैं।

प्रस्तुत अंक में व्यक्त विचार शोधकर्ता के अपने हैं, संपादक इससे सहमत हो यह जरूरी नहीं।

अतिथि संपादक

डॉ. आरिफ महात।

अनुक्रम

Sr. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	हिंदी साहित्य में नवगीत स्वरूप, विकास और नवगीतकार	डॉ. अनिल विश्वनाथ काळे	1-5
2	समाज को आईना दिखाते हिंदी फिल्मी गीत	डॉ. आरिफ शौकत महात	6-13
3	दलितों के पक्ष में अदम गोंडवी की बुलंद ग़ज़ल	प्रो.डॉ.बलवंत जेऊरकर	14-17
4	हिंदी गीत एवं ग़ज़ल में प्रेम, विरह और संवेदना की अभिव्यक्ति	डॉ. प्रविण विलास चौगले	18-20
5	साहिर लुधियानवी की शायरी और गीत	प्रोफेसर(डॉ.) शिवाजी उत्तम चवरे	21-25
6	हिन्दी गजल में सामाजिक चेतना: दुष्यंत कुमार तथा अदम गोंडवी के परिप्रेक्ष्य में	प्रो आभा सिंह	26-30
7	हिंदी फिल्मों में गीत का महत्त्व	श्रीमती चौगुले अंजना आण्णासाहेब	31-35
8	लोकगीत साहित्य और संस्कृति	अस्मिता भगवान पाटील (शोधार्थी)	36-39
9	भीम गीत: दलित प्रबोधन	डॉ. सरिता बाबासाहेब बिड़कर श्री. अजय महेंद्र कांबले	40-45
10	हिन्दी ग़ज़ल : सामाजिक परिदृश	प्रा.जयसिंग गोवर्धन चवरे	46-49
11	जिंदगी का ऑक्सीजन : फिल्मी गीत	डॉ. जयसिंग मारुती कांबळे	50-54
12	डॉ. राहत इन्दौरी के ग़ज़लों में सामाजिक परिदृश्य	डॉ. जावेद खलील शेख	55-58
13	हिन्दी गीत और गजल में प्रतिरोधी स्वर	प्रा. डॉ. इम्रान शेख	59-61
14	हिंदी गीत और ग़ज़ल में किसान जीवन : संघर्ष और संवेदना	डॉ.वाघमारे खंडूजी हानवतराव	62-65
15	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में सामाजिक चेतना के स्वर	डॉ. निलेश सखाराम डामसे	66-69
16	समकालीन हिंदी ग़ज़ल का सिंहावलोकन	प्रो.पंढरीनाथ पाटील "शिवांश"	70-75
17	गुलज़ार : हिंदी सिनेमा के रूमानी गीतकार	डॉ. अशोक मोहन मरळे	76-79
18	पीड़ा से परिवर्तन तक : दुष्यन्त कुमार की ग़ज़ल-चेतना	डॉ. कविता संदीप तळेकर	80-84
19	साहिर लुधियानवी के गीतों में सामाजिक परिदृश्य	डॉ. युवराज राजाराम मुळये	85-90
20	हिंदी गीत और गज़ल में प्रतिरोधी स्वर	प्रा.डॉ.भारत बा. उपाध्य	91-94
21	अल्फाजों का जादूगर – साहिर लुधियानवी !	प्रो.(डॉ.) विजय महादेव गाडे	95-99
22	नीरज के गीतों में विविध भावों का चित्रण	डॉ. जयशंकर रामजीत पांडेय	100-103
23	हिन्दी फिल्मी गीतों का सांस्कृतिक परिदृश्य	प्रा.डॉ.भरत त्र्यंबक शेणकर	104-106
24	दुष्यंत कुमार की गजलों में सामाजिक यथार्थ	डॉ. भास्कर उमराव भवर	107-109
25	हिंदी फिल्मों में ग़ज़ल गायन शैली का विकासात्मक विश्लेषण	डॉ. भूषण सदानंद घरत	110-113
26	आधुनिक हिंदी गजलों में नारी चेतना का स्वर	डॉ. सुमेध पानाचंद नागदेवे	114-116
27	दुष्यंन्तोत्तर हिंदी गजलों में बदलते सामाजिक मूल्यों का प्रतिबिंब	डॉ.कृष्णात आनंदराव पाटील	117-118
28	आदिवासी लोकगीत और संस्कृति	डॉ.मधुकर लक्ष्मण डोंगरे	119-122
29	संवेदनाओं की सघन अनुभूति के गीतकार : गुलजार	प्रो. (डॉ.) प्रवीणकुमार न. चौगुले	123-127

30	हिंदी गीत और ग़ज़ल : नारी परिदृश्य	डॉ. संगीता राहुल यादव	128-130
31	मीराबाई के काव्य में लोकगीत, साहित्य और संस्कृति	संगिता दिपक माळी	131-133
32	हिंदी गीत और ग़ज़ल - सामाजिक परिदृश्य	संतोष सिंह	134-139
33	'तीसरी कसम' (1966 ई.) फिल्म के गीतों में अभिव्यक्त मानवीय संवेदना एवं मूल्य	डॉ.माधव राजप्पा मुंडकर	140-143
34	स्वर से चेतना तक : हिंदी गीत–ग़ज़लों में स्त्री संवेदना और मानवीय दृष्टि का विकास	प्रा. आसमा मकबूल सौंदलगे -बेग	144-150
35	हिंदी गीत और ग़ज़ल में प्रगतिशील चेतन	प्रा.जयवंत मधुकर बाबर	151-154
36	वर्तमान परिवेश पर व्यंग्य करता : 'हालत ए वतन'	प्रा. बापू नानासाहेब शेळके	155-159
37	हिंदी फिल्मों में संस्कार संबंधी लोकगीत	प्रोफेसर डॉ. अमोल पालकर	160-165
38	आदमी की तरफ़' संग्रह की गजलों में व्यक्त भाव-भावनाएँ	प्रोफ़ेसर कैप्टन बाबासाहेब माने	166-171
39	हिंदी ग़ज़ल और स्त्री जीवन	डॉ. भरत त्र्यंबक शेणकर अनिल भाऊसाहेब झिने	172-175
40	गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के गीतों में मानवीय संवेदना	डॉ. नानासाहेब जावळे	176-178
41	कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में बदलतीं समाज मान्यताएँ और समस्याएँ	डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे	179-183
42	जहीर कुरेशी की गजलों में सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना	डॉ.नितीन विठ्ठल पाटील	184-188
43	हिंदी फिल्मों में गीत और गजल का महत्व	प्रो डॉ. संघप्रकाश दुड्डे,	189-190
44	जहीर कुरेशी की गजलें : राजनीतिक परिदृश्य	प्रो.डॉ.सरोज पाटील	191-194
45	हिंदी फिल्म जगत के प्रसिद्ध गीतकार : गोपालदास 'नीरज'	डॉ. सपना तिवारी	195-198
46	हिंदी सिनेमा में गीतकार एवं गजलकारों का योगदान: एक विवेचन	डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	199-203
47	आचार्य अरुण दिवाकर नाथ वाजपेयी की गजल में सामाजिक चेतना और समकालीनता	डॉ. सुषमा मारुती चौगले	204-207
48	पीयूष मिश्रा द्वारा लिखे गए लोकप्रिय हिंदी फ़िल्मी गीत: सामाजिक परिदृश्य	विद्या शितलकुमार गायकवाड	208-211
49	हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में चेतना के विभिन्न स्वर	डॉ.विट्ठल शंकर नाईक	212-216
50	हिंदी फिल्मी गीतकार और ग़ज़लकार	प्रा. व्ही. एच. वाघमारे	217-219
51	हिंदी गीत, गजल और दलित परिदृश्य	प्रो.डॉ. साताप्पा शामराव सावंत	220-222
52	हिंदी गीत ग़ज़ल में सामाजिक परिदृश्य	माधुरी संजय शिंदे (चव्हाण)	223-229
53	रामदरश मिश्र की ग़ज़लों में सामाजिक परिदृश्य	डॉ. अनिल विठ्ठल मकर	230-233
54	हिन्दी गजल साहित्य: सामाजिक परिदृश्य	प्रा. डॉ. हबीरराव मारुती चौगले	234-237
55	आम आदमी की पीड़ा, संघर्ष और प्रतिरोध का दस्तावेज़ हैं - 'साये में धूप'...	डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे	238-241
56	हिन्दी गज़ल का सामाजिक परिदृश्य	प्रा डॉ मंगल मिलिंद कांबळे	242-244

57	लोकगीत और संस्कृति का समन्वय	डॉ. प्रिया ए.	245-247
58	आसमान से आगे की बहरती सोच- राजेश रेड्डी के गज़लों के संदर्भ में....	डॉ.आरिफ गफुर जमादार	248-250
59	राजेश रेड्डी जी की ग़ज़लें और पीयूष मिश्रा जी के गीतों में प्रतिरोधी स्वर	अबेद उल्लाह सय्यद बाबर अली बशारत अली	251-257
60	राजनीतिक बगावत : अदम गोंडवी की गजल	अविनाश दिलीप कांबळे	258-261
61	हिंदी साहित्य में नवगीत का विकास और प्रवृतियाँ	डॉ. छाया माळी	262-266
62	हिंदी-गज़ल का शिल्प विधान	डॉ. नवनाथ शिंदे	267-270
63	लोकगीत, साहित्य और संस्कृति	डॉ.अमोल पालकर श्री. हनुमान तुळशीराम नागणे	271-273
64	गुलशन-ए-ग़ज़ल' में चित्रित विविध परिदृश्य	सुरेश आनंदा मोरे	274-276
65	छ.शिवाजी महाराज पर बनी फिल्मों में गीतों का महत्व	कु.सुनीता ज्योतीराम आडसूळ	277-280
66	हिंदी गीत एवं गज़ल में नारी विमर्श	समृद्धि संजय सुर्वे	281-285
67	हिंदी फिल्मों में गीत और गजल का महत्व	श्रीकांत जयसिंग देसाई	286-288
68	हिंदी गजल : सामाजिक चेतना	सुश्री. टेकाळे रागिनी पुरुषोत्तम डॉ. भाऊसाहेब एन. नवले	289-292
69	कवि गोपालदास सक्सेना 'नीरज' के गीतों में श्रृंगारिकता का चित्रण	प्रो. डॉ. मनोहर जमदाडे	293-296
70	हिंदी फ़िल्मों में गीत और ग़ज़ल का महत्व	मानसी प्रभू भट गावकर,	297-299